ब्रह्मा बाबा के दस कदम

शिव पिता परमात्मा के श्रीमत रूपी कदमों पर अपने कदम रख चलने वाले एक महान हस्ती थे ब्रह्माबाबा, जिनकी महानता को ये सृष्टि न कभी भुला पाई है और न कभी भुला पाएगी। उन्होंने शिव पिता के श्रीमत को न केवल अपने आचरण में ढ़ाला बल्कि उसे अपना जीवन ही बना लिया, शायद इसीलिए वे परमात्मा शिव के समान ही बन गए और इस सम्पूर्ण मानवजाति के प्रजापिता भी। आज वे इस पूरी सृष्टि के लिए एक उदाहरण मूर्त हैं और सभी के आदर्श भी। उनके जीवन को शब्दों में बांधना तो असंभव ही है, फिर भी उनके जीवन के दस सिद्धान्तों रूपी कदमों को हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं जो आपके अपने जीवन को भी उन ऊँचाइयों तक ले जाने में सहायक होगा। आप भी अपने जीवन को दुनिया के सामने एक उत्तम, सम्पूर्ण आदर्श के रूप में प्रस्तुत कर पाएंगे।

1. ब्रह्मा बाप समान उदारचित्त बनो।

जैसे साकार ब्रह्मा बाप विशेष उदारचित्त के गुण से सर्व का उद्धार करने के निमित्त बने, ऐसे फॉलो फादर करो। मंसा-वाचा-कर्मणा, सम्बंध-सम्पर्क सब बातों में उदारचित्त, बड़ी दिल वाले बनो। हर आत्मा की कमियों को समाओ और उन्हें गुण व शक्ति का सहयोग दो। उदारचित्त बनने के लिए सदा इस स्मृति में रहो कि मैं अधिकारी आत्मा हूँ, कभी किसी के भी अधीन नहीं होना। हर प्रकार की अधीनता को समाप्त करने वाली मैं उदाहरण स्वरूप, उद्धारमूर्त, उदारचित्त आत्मा हूँ, इस स्वमान में रहो।

उदारचित्त बनने के लिए ब्रह्मा बाप समान अपने पास सर्व शक्तियों का स्टॉक भरपूर करो। आपका हर संकल्प, हर सेकण्ड दूसरों प्रति हो। मैं मास्टर दाता, वरदाता हूँ, इस स्वमान में रहो।

मैं उदारचित्त, उद्धारमूर्त आत्मा हूँ - इस स्वमान में रह मंसा द्वारा सर्व शक्तियों का दान, वाणी द्वारा ज्ञान दान और कर्म द्वारा गुणों का दान करो, इससे सिद्धि स्वरूप, वरदानी मूर्त बन जायेंगे।

हम पूर्वज आत्मायें सर्व का उद्धार करने के निमित्त हैं, इस स्वमान व पोज़ीशन पर स्थित होकर सर्व आत्माओं को शक्तियों का जल दो। योग की सकाश दो।

2. ब्रह्मा बाप समान पालनहार बनो – जैसे ब्रह्मा बाप ने आप बच्चों को अलौकिक जन्म देने के साथ ऐसी पालना दी जो सबके मुख से यही आवाज़ निकलता `मेरा बाबा'। ऐसे हर एक से मेरेपन की भासना आये, इसको कहा जाता है बाप समान। जो सम्पर्क में आये उसे रिलेशन की अनुभूति कराओ फिर कनेक्शन सहज हो जायेगा। आप जिनके भी निमित्त बनते हो उनकी पालना कर बड़ा करो जो वे प्रेम और पालना द्वारा अविनाशी वर्से के अधिकारी बन जायें। उन्हें ऐसा शक्तिशाली बनाओ जो वे सदा अपने को विघ्न-विनाशक, शक्ति सम्पन्न हेल्दी और वेल्दी अनुभव करें।

सर्व की पालना करने के लिए अपना जगतमाता, ज्ञान गंगा व महादानी, वरदानी रूप सामने लाओ। इसी स्वरूप में स्थित होकर किसी भी आत्मा को दृष्टि देंगे तो उनको वरदानों की प्राप्ति हो जायेगी। कल्याणकारी भावना से कैसी भी अपकारी आत्मा उपकारी बन जायेगी।

जैसे माँ बच्चों की कमज़ोरियों को व कमियों को नहीं देखती, उसको उसे ठीक करने का ही रहता है। माँ में दो विशेष शक्तियां सहन करने और समाने की होती है। ऐसे हर आत्मा की पालना करने के लिए यह दोनों शक्तियां यूज़ करो तो सफलता ज़रूर होगी।

3. ब्रह्मा बाप समान सर्व के शुभ चिंतक, शुभ भावना, शुभ कामना सम्पन्न बनो।

ब्रह्मा बाप ने अपनी शुभचिंतक वृत्ति से सारे विश्व की सेवा की, सर्व के प्रति शुभ कामना और शुभ भावना रखी, ऐसे फॉलो फादर करो। अपने शुभ संकल्प की किरणें सूर्य के समान विश्व में चारों ओर फैलाओ।

शुभ-भावना अर्थात् शक्ति-शाली संकल्प। किसी भी आत्मा के प्रति व बेहद विश्व की आत्माओं के प्रति शुभ भावना रखना अर्थात् शक्ति-शाली शुभ और शुद्ध संकल्प करना कि इस आत्मा का कल्याण हो जाए। इसके लिए दो बातों पर अटेंशन रहे - एकान्त और एकाग्रता।

ब्राह्मण परिवार के बीच एक दो के प्रति अपनी शुभ भावना, श्रेष्ठ कामना द्वारा उन्हें परिवर्तन करने में सहयोगी बनो, उनके संस्कारों की कमज़ोरी को जानते हुए भी स्नेह और सहयोग दो। न्यारे नहीं बनो। किनारा नहीं करो, सबके सहारे बनो।

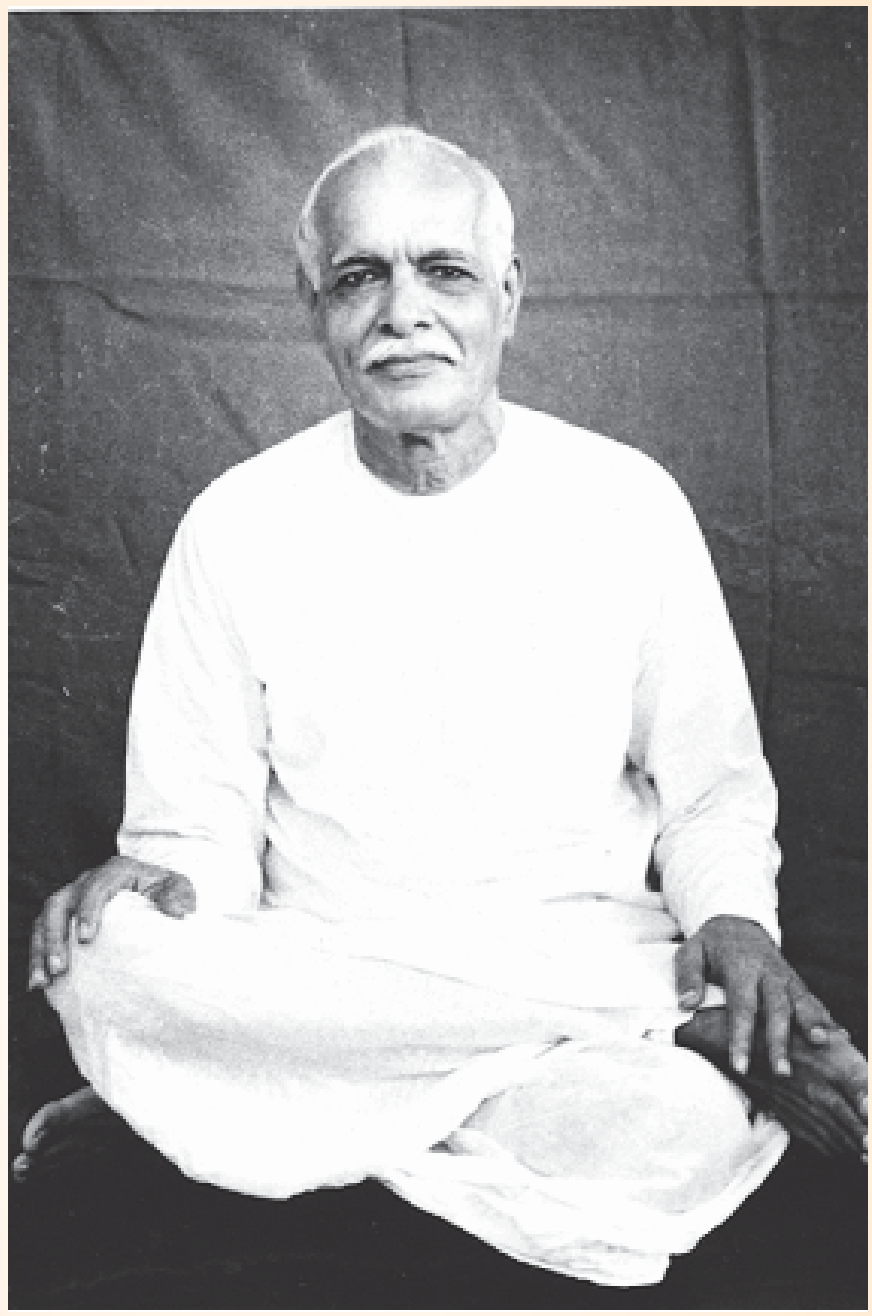

बच्चों को रिगार्ड देकर दिखाया। निर्माण बन बच्चों को रिगार्ड देकर राय-सलाह दी। ऐसे संयम प्रमाण एक दो को रिगार्ड दो। सदा यह स्लोगन याद रहे कि जैसी मुझ निमित्त आत्मा की वृत्ति होगी वैसा वायुमंडल बनेगा।

4. ब्रह्मा बाप समान निमित्त और निर्माण बन सबको सम्मान दो।

जैसे साकार रूप में निमित्त बन हर कर्म संयम के साथ करके दिखाया। निर्माण बन अपनी वृत्ति को शुभ भावना से ऐसा भरपूर करो जो लोगों को वायब्रेशन आये कि कोई शांति का पुंज शांति की किरणें दे रहा है। इसके लिए अपने मन को एकाग्र वृत्ति से, शुभकामना, परोपकारी भावना से सदा भरपूर रखो।

निमित्त भाव की विधि से सेवा में वृद्धि करो। निमित्त बनने के साथ सबके स्नेही भी बनो। स्नेह की कमी रहमदिल और नम्र बनने नहीं देती लेकिन कहीं-कहीं अति स्नेह के कारण निर्माणता का गुण भी नुकसान करता है, इसलिए निर्माणता के साथ मालिकपन का नशा भी रखो।

मैं मास्टर विश्व निर्माता हूँ, इस स्वमान में रहकर हर संकल्प और कर्म करो तो निर्माणता व सरलता का गुण स्वतः आ जायेगा। निमित्त समझकर सेवा करेंगे तो लगाव झुकाव से सहज किनारा हो जायेगा।

निमित्त समझने से करावनहार बाप की याद रहेगी और करावनहार स्वामी सदा ही श्रेष्ठ कार्य कराते रहेंगे। इसलिए ट्रस्टी हूँ, निमित्त हूँ, इस स्मृति से सदा हल्के रहो तो निर्णय शक्ति समय पर ठीक कार्य करेगी और सफलता मिलती रहेगी।

5. ब्रह्मा बाप समान बेफिक्र बादशाह बनो।

जैसे ब्रह्मा बाप सदा निश्चय-बुद्धि होने के कारण बेफिक्र बादशाह की स्थिति में रहे, किसी भी बात में क्वेश्चन मार्क का टेढ़ा रास्ता लेने के बजाए कल्याण की बिन्दी लगाई, एक बल एक भरोसा इसी आधार पर अचल-अडोल, एकरस स्थिति बनाई, ऐसे फॉलो फादर करो।

सदा निश्चय रहे कि बाप हमारा रक्षक है, कल्याणकारी है, किसी भी बात में हमारा अकल्याण हो नहीं सकता। सदा यही उमंग रहे कि हमारी विजय हुई पड़ी है। नशा रहे कि विजय हमारा जन्म सिद्ध अधिकार है तो बेफिक्र बादशाह रहेंगे।

जो कुछ भी होता है - साइडसीन है। साइडसीन को देखकर मंज़िल को छोड़ा नहीं जाता। चलते चलो, पार करते चलो तो मंज़िल समीप अनुभव होगी। नथिंगन्यू की स्मृति से अचल-अडोल बनो, किसी भी दृश्य को देखकर हिलने के बजाए वातावरण को पावरफुल बनाने के निमित्त बनो।

6. ब्रह्मा बाप समान एकांतप्रिय के साथ मिलनसार बनो।

जैसे ब्रह्मा बाबा सदा एकांत में ज्ञान मनन व एक बाप की याद में मगन रहने के कारण रुहानियत की स्थिति में सम्पन्न रहे और बच्चों से मिलने का भी अनुभव कराया। ऐसे प्रतिदिन एकांत में रमण भी करो और मिलनसार भी बनो। अपने दिल की लगन से बीच-बीच में एकांतवासी बनने का समय निकालो। लेकिन एकांत में रमणीकता गायब न हो। दोनों समान और साथ-साथ रहे।

एकांतप्रिय बनना माना यह नहीं कि मिलने से दूर रहना। कोई भी बात अति में अच्छी नहीं होती। एक गुण तूफान मिसल हो, दूसरा मर्ज हो तो अच्छा नहीं, इसलिए दोनों का बैलेंस रहे।

जैसे ब्रह्मा बाप ने एकांतप्रिय बन एकाग्रता - शेष पेज 7 पर...